चतुर्थो वर्गः

8. कस्याश्चिदेकस्याः सूक्तेः समीक्षा कार्या - 15

(क) न खलु वयस्तेजसो हेतुः

(ख) विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः

9. कमप्येकं विषयमधिकृत्य लेखं लिख्यताम्? 15

(क) आतङ्कवादः

(ख) संस्कृत-शिक्षणम्

A **(Printed Pages 4)**

Roll No. _____

A-245

शास्त्रि द्वितीय वर्ष परीक्षा, 2015

(अनिवार्यविषयः)

प्रथम प्रश्न-पत्रम्

समयावधिः : घण्टात्रयम् **पूर्णाङ्काः :100**

निर्देश : प्रथमः प्रश्नोऽनिवार्यः। प्रतिवर्गमेकः प्रश्नोऽवश्यमेव समाधेयः।

1. सङ्क्षिप्तटिप्पण्यः कार्याः। 4×10=40

(क) भारवेरर्थगौरवम्

(ख) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नायकः

(ग) काव्य-प्रयोजनम्

(घ) व्यञ्जनाशक्तिः

(ङ) शिखरिणी

(च) मेघदूतस्याङ्गीरसः

(छ) कालिदासकृतयः

(ज) भर्तृहरेः शतकत्रयम्

(झ) लघुत्रयी-विमर्शः

(ञ) आचार्यो दण्डी

प्रथमो वर्गः

2. विषयमेकमवलम्ब्य निबन्धो लेखनीयः 15

(क) उपमा कालिदासस्य

(ख) परोपकाराय सतां विभूतयः

3. अधोलिखितयोरेकं विषयमधिकृत्य निबन्धों लेख्यः? 15

(क) भारतीया संस्कृतिः

(ख) बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्

द्वितीयो वर्गः

4. अधोलिखितस्याऽनुवादः संस्कृत भाषायां विधेयः? 15

राम ने रावण को जीता और सीता को प्राप्त किया। उन्होंने लङ्का का राज्य विभीषण को दे दिया। वह सीता और लक्ष्मण के साथ पुष्पक-विमान से अयोध्या लौटे। अयोध्या में भरत उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। अयोध्या पहुँच कर राम ने अपनी माताओं और गुरूओं का अभिवादन किया। यह समाचार पाकर अयोध्यावासी प्रसन्नता के सागर में हिलोरे लेने लगे। सम्पूर्ण नगर में श्रीराम के स्वागत हेतु दीप जलाये गये तथा धूमधाम के साथ राम का राज्याभिषेक किया गया।।

5. श्लोकपूर्तिः करणीया 15

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन.....

तृतीयो वर्गः

6. अधोनिर्दिष्टगद्यांशस्याऽनुवादः संस्कृतेन करणीयः 15

हम सभी उस भारत वर्ष की पावनभूमि पर रहते हैं जो राम-कृष्ण आदि की जन्म स्थली है। भारतवर्ष की प्रतिष्ठा सत्य-निष्ठा-तप तथा सदाचार से है। इसी भारत भूमि पर रहकर अनेक ऋषियों-मुनियों ने सिद्धियाँ प्राप्त की हैं। अनेक शास्त्रों तथा दर्शनों के प्रतिष्ठित ग्रन्थों की रचना-स्थली भारत भूमि है। ये सभी ग्रन्थ संस्कृत भाषा में रचित हैं। संस्कृत से भारतीय धर्म का संस्कृति की रक्षा सम्भव है। इसीलिए संस्कृत-साधना को देशोन्नति का परम साधन बनाना चाहिए?

7. अधोलिखितश्लोकयोर्हिन्दीभाषयाऽनुवादो विधेयः? 15

(क) विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं

विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरूः।

विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता

विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विद्याविहीनः पशुः।।

(ख) न जायते म्रियते वा कदाचिन्

नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।

अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो

न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।